भगत त्रिलोचन - सबद १

माइआ मोहु मनि आगलड़ा प्राणी जरा मरणु भउ विसरि गइआ ॥

रागु सिरीरागु, भगत त्रिलोचन, गुरु ग्रंथ साहिब, ९२

माइआ मोहु मनि आगलड़ा प्राणी जरा मरणु भउ विसरि गइआ ॥
कुट्मबु देखि बिगसहि कमला जिउ पर घरि जोहहि कपट नरा ॥१॥
दूड़ा आइओहि जमहि तणा ॥
तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ॥
कोई कोई साजणु आइ कहै ॥
मिलु मेरे बीठुला लै बाहड़ी वलाइ ॥
मिलु मेरे रमईआ मै लेहि छडाइ ॥१॥ रहाउ ॥
अनिक अनिक भोग राज बिसरे प्राणी संसार सागर पै अमरु भइआ ॥
माइआ मूठा चेतसि नाही जनमु गवाइओ आलसीआ ॥२॥
बिखम घोर पंथि चालणा प्राणी रवि ससि तह न प्रवेसं ॥
माइआ मोहु तब बिसरि गइआ जां तजीअले संसारं ॥३॥
आजु मेरै मनि प्रगटु भइआ है पेखीअले धरमराओ ॥
तह कर दल करनि महाबली तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ॥४॥
जे को मूं उपदेसु करतु है ता वणि त्रिणि रतड़ा नाराइणा ॥
ऐ जी तूं आपे सभ किछु जाणदा बदति त्रिलोचनु रामईआ ॥५॥२॥

सार: सर्वव्यापकता ऐसे सार्वभौमिक तत्व को दर्शाती है जो अस्तित्व में हर जगह मौजूद है पर हमारी सामान्य समझ की सीमाओं से दूर है। जबकि कई आध्यात्मिक परंपराएँ इसे किसी दैवीय शक्ति से जोड़ती हैं लेकिन गहन विचार करने से पता चलता है कि यह वही आंतरिक चेतना है जो हर जीव के भीतर वास करती है। जैसे-जैसे यह एहसास गहराता है, सर्वव्यापी ऊर्जा को एक अलग इकाई के रूप में देखने का नज़रिया धीरे-धीरे समाप्त होने लगता है जिससे अहं और द्वैत की कठोर सीमाएँ

मिटने लगती हैं। इस प्रक्रिया में, हम जीवन के अधिक समृद्ध और एकीकृत अनुभव के लिए जगह बनाते हैं और समस्त अस्तित्व की परस्पर संबद्धता का बोध जागृत होता है।

माइआ मोहु मनि आगलड़ा प्राणी जरा मरणु भउ विसरि गइआ ॥
दुनिया की सुख-सुविधाओं में डूबा मन, मनुष्य के आध्यात्मिक पतन के डर और मौत की सच्चाई को भुला देता है। यह दिखाता है कि कैसे भ्रम जीवन की सच्चाइयों पर हावी होकर मन को क्षणभंगुर चीज़ों में उलझा सकते हैं।

कुट्मबु देखि बिगसहि कमला जिउ पर घरि जोहहि कपट नरा ॥१॥
जो इंसान अपनी कामयाबियों पर गर्व करता है, वह कमल के फूल की तरह खिला हुआ तो दिख सकता है लेकिन हो सकता है कि वह भीतर से दूसरों की वस्तुओं की लालसा भी रख सकता है। यह दिखावे के विरोधाभास को उजागर करता है, व्यक्ति भले ही नेक दिख सकता है लेकिन उसके मन में लालच की गंदगी भी हो सकती है। (१)

दूड़ा आइओहि जमहि तणा ॥
जैसे-जैसे बुढ़ापा आता है और मौत निकट दिखती है, यह स्थिति जीवन की परम सच्चाई को सामने लाती है कि बदलाव और विनाश निश्चित हैं।

तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ॥
यह इतनी शक्ति रखती है कि अहंकार इसके सामने टिक नहीं सकता। यह ज़ोर देता है कि प्रकृति के नियम ही सर्वोपरि हैं जबकि भ्रम स्वभाव से ही कमज़ोर होते हैं।

कोई कोई साजणु आइ कहै ॥
ऐसे पवित्र लोग बहुत कम होते हैं जो आत्म-ज्ञान की अपनी खोज को व्यक्त करते हैं। यह ऐसी सोच का प्रतीक है जो अपनी अलग पहचान को एकता की विशालता में मिलाने के लिए तैयार है।

मिलु मेरे बीठुला लै बाहड़ी वलाइ ॥
वह अपने भीतरी अस्तित्व, उस प्रिय, सहज और सर्वव्यापी चेतना को अपनाना और उससे जुड़ना चाहते हैं। यह गहरा अहसास हमें यह पहचानने की शक्ति देता है कि जिन गुणों की हम तलाश करते हैं, वह पहले से ही हमारी चेतना में मौजूद हैं।
मिलु मेरे रमईआ मै लेहि छडाइ ॥१॥ रहाउ ॥
वह अपने अहं से मुक्त होने के लिए उस सर्वव्यापी शक्ति की मौजूदगी को अपनाते हैं। यह संकेत देता है कि वास्तविक आत्मज्ञान तभी संभव है जब हम एकत्व को स्वीकार करें और उसे अपने जीवन में आत्मसात करें। (१)(विराम)

अनिक अनिक भोग राज बिसरे प्राणी संसार सागर पै अमरु भइआ ॥
अनेक सांसारिक सुखों और भोग-आराम के पीछे भागते हुए, मनुष्य अकसर अपना असली रास्ता भूल जाता है और भ्रम में रहता है कि वह इस भौतिक दुनिया में अमर है। इसका अर्थ है कि दैनिक काम ज़रूरी तो हैं लेकिन अपनी नश्वरता को पहचानना और सचेत रहना हमें संतुष्टि देता है।

माइआ मूठा चेतसि नाही जनमु गवाइओ आलसीआ ॥२॥
माया के धोखे में फँसकर इंसान होश खो बैठता है और आलस में अपना जीवन बर्बाद कर देता है। यह स्थिति आध्यात्मिक जड़ता को दिखाती है जहाँ क्षणभंगुर इच्छाएँ स्थायी और आंतरिक गुणों के महत्व पर हावी हो जाती हैं। (२)

बिखम घोर पंथि चालणा प्राणी रवि ससि तह न प्रवेसं ॥
यह मार्ग अत्यन्त कठिन और संकटपूर्ण है, जहाँ न सूर्य का प्रकाश है और न चन्द्रमा का। यह ऐसी आध्यात्मिक यात्रा को दर्शाता है जिसमें आत्मबोध की स्पष्टता, अंतर्दृष्टि का ताप और आत्म-चिंतन की शांति का अभाव है।

माइआ मोहु तब बिसरि गइआ जां तजीअले संसारं ॥३॥
सांसारिक भ्रमों से अपने लगाव को सचमुच छोड़ने के लिए, हमें सबसे पहले स्वयं को इस मायावी दुनिया के बंधनों से मुक्त करना होगा। (३)

आजु मेरै मनि प्रगटु भइआ है पेखीअले धरमराओ ॥
आज मेरे मन में यह सत्य प्रकट हुआ है कि अंतरात्मा ही सदा की जागरूक और न्यायप्रिय न्यायाधीश है। यह गहन सच बताता है, हमारा वास्तविक स्वरूप हमारे इरादों का प्रतिबिंब है चाहे हम उन्हें कितना भी छिपाने की कोशिश क्यों न करें।

तह कर दल करनि महाबली तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ॥४॥
उसकी शक्तिशाली सेनाओं की ताक़त मुझे कुचल सकती है, मैं उनके सामने टिक नहीं सकता। यह नैतिकता की शक्ति का प्रतीक है जिसके सामने अहं पूरी तरह असहाय है। (४)

जे को मूं उपदेसु करतु है ता वणि त्रिणि रतड़ा नाराइणा ॥
मुझे जो भी उपदेश मिलें, वह समस्त सृष्टि में व्याप्त उस सर्वव्यापक चेतना की उपस्थिति का बोध कराए। यह दृष्टिकोण अस्तित्व के एकत्व के साथ पूर्णतः जुड़ाव को दिखाता है।

ऐ जी तूं आपे सभ किछु जाणदा बदति त्रिलोचनु रामईआ ॥५॥२॥
हे सर्वव्यापी शक्ति, आप सब कुछ जानते हैं, त्रिलोचन कहते हैं कि वह इस सर्वव्यापी चेतना के प्रति समर्पित हैं। इससे स्पष्ट होता है कि सच्ची भक्ति एकत्व की अनुभूति से ही आती है। (५)(२)

तत्त्व: भक्त त्रिलोचन कहते हैं कि जब हम ज्ञान को अपनाते हैं तब हमारा मन स्पष्ट रूप से यह पहचान सकता है कि हमारी अंतरात्मा हमारा मूल नैतिक पथ-प्रदर्शक के रूप में काम करती है। अंतरात्मा, स्वाभाविक और सहज शक्ति है जो हमें अपने कार्यों, इरादों और चरित्र का मूल्यांकन करने में सक्षम बनाती है। यह जागरूकता हमारे भीतर मौजूद, अदृश्य और सर्वव्यापी शक्ति की

आवाज़ है जो आचरण और निर्णय में हमारा दृढ़ता से मार्गदर्शन करती है। इस आंतरिक मार्गदर्शक को अपनाने से जीवन अधिक नैतिक और संतोषजनक बन सकता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com